श्रीपरशुरामस्तोत्रम्

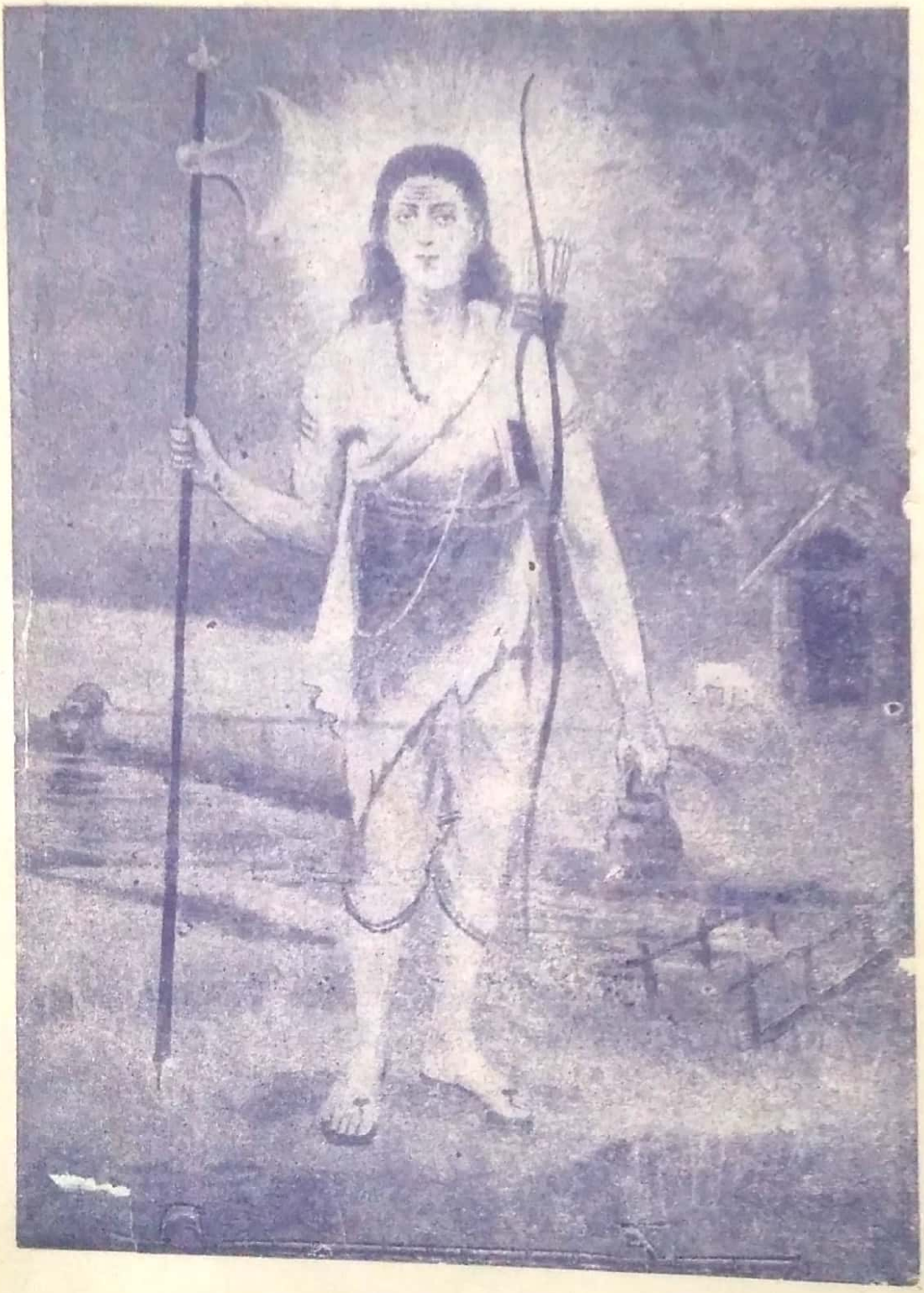

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहितम्

Scanned with CamScanner

श्रीमदमृतग्रन्थमालायाः द्वितीयं पुष्पम्

प्रणेता—

श्रीमान् अमृतवाग्भव आचार्यः

सम्पूर्णा विलसन्ति सोपनिषदो वेदोपवेदाः पुरः
पृष्ठे मार्गणपूर्णतूणविलसत्कोदण्डदण्डो महान् ।
बर्हिष्टोमकमण्डलू च परशुं पाण्योर्वहन् शास्त्रवित्
शापे शस्त्रवरे च पेशलकरः श्रीभार्गवो भ्राजते ॥

Scanned with CamScanner

पुनर्मुद्रणाद्यधिकारा ग्रन्थकर्त्रधीनाः सन्ति ।

॥ श्रीः ॥

श्रीमदमृतग्रन्थमालायाः द्वितीयं पुष्पम्

महामहिम-आचार्य
श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीतं

श्रीपरशुरामस्तोत्रम्

—:※:—

राष्ट्रभाषाऽनुवादसहितम

—:※:—

आशुकवि पं० नन्दकुमार शर्म प्रणीत
पद्यानुवाद सहितम्

चतुर्थं वार १०००] सं० २०२६ [मूल्य विश्वोद्धार

Scanned with CamScanner

॥ श्रीः ॥

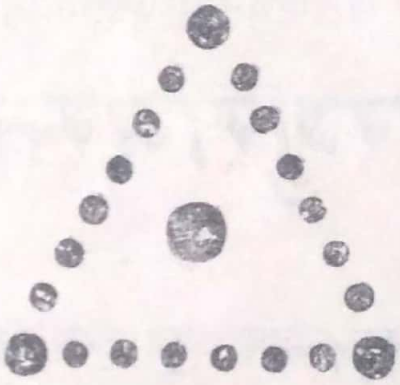

अमृतनिभृतशास्त्रं साधु मुद्रापयित्वा
प्रथयति विबुधानां लब्धुकामः प्रसादम् ।
अमलमतिप्रसादीलालपुत्रोऽत्रिगोत्रो
भरतपुरनिवासी मिश्रगोविन्दशर्मा ॥

भूमिका

ऐ धर्मवीरो ! भारतीयो ! विशेष रूपसे ब्राह्मणवीरो ! भगवान्‌के अवतार स्वरूप अत्यन्त श्रेष्ठ ब्राह्मणवीर, शास्त्र और शस्त्र दोनोंमें सिद्धहस्त शाप और चाप दोनोंके चढ़ाव और उतारमें चतुर, भृगुगोत्रोत्पन्न भगवान् श्रीपरशुरामवीरने अवतार लेकर पृथ्वी पर क्या किया था यह तो अत्यन्त प्रसिद्ध ही है।

इसी लिए अपनी अत्यन्त इष्ट उन्नति और सबसे बड़ी उन्नतिका मूलकारण रामनवमी कृष्णाष्टमीके समान परशुरामतृतीयामहोत्सव भी सम्पूर्ण भारतीयोंको और विशेषतः ब्राह्मणोंको तो अवश्य मनाना चाहिये, यह बात विद्वान् लोग जानते ही हैं, विद्वानोंके आगे पुनः निवेदनकी कोई आवश्यकता नहीं।

उन उन महोत्सवोंमें उन उन देवताओंका स्तोत्रपाठ अत्यन्त आवश्यक होता है। भगवानके अवतार राम कृष्ण आदिके स्तोत्र मिलते भी हैं, परन्तु परशुरामके स्तोत्र दुष्प्राप्य होनेसे खिन्न-चित्त भक्तोंकी प्रार्थनासे सबोंको सुलभ और सुपठ छोटासा यह श्रीपरशुरामस्तोत्र यथा-मति बनाकर चित्रके साथ भारतीय धार्मिक लोगोंके करकमलोंमें समर्पित किया जाता है।

प्रार्थना है कि भगवान् भार्गव श्रीपरशुरामजी और उनके आराधक भारतीयगण इससे सन्तुष्ट हों। इति शम्।

सं० १९८९ वै०शु० ३ रविवार
श्रीपरशुरामजयन्ती
मटन (काश्मीर)

निवेदक—
आप धार्मिकोंका वशम्वद—
अ० वा० आचार्य

Scanned with CamScanner

* श्रीः *

* समर्पणम् *

भो भो ! भारतभूमिभूषणवराः ! सद्धर्मभर्मोद्धुराः !
श्रीमद्भार्गववीरभूरिमहिमाविभ्राजकोऽयं स्तवः ॥
धर्मद्वेषणनीतिभीतिभिदुरो भावत्कभीभेदभित्
कण्ठेऽकुण्ठमहर्निशं विलसताद्भव्याय हे भारताः !

भो ! भो ! भारत भूमि-सुभग आभूषण प्यारे ।
उद्धारक सद्धर्म भर्म बर मात दुलारे ॥
धर्मद्वेषिन नीति भीतिकों भग्न करैय्या ।
भय-भ्रम-भेक भगान अखिल भूभार हरैय्या ॥
श्रीमद्भार्गव वीर परशुधर प्रभा प्रकाशक ।
खल दुर्नीति नृशंस आततायिन कौ शाशक ॥
परशुरामस्तोत्र सतत मुद मंगल कारी ।
शोभित हो दिन रैन रावरे कण्ठ मंझारी ॥

ऐ ! भारतभूमिके भूषणश्रेष्ठ सद्धर्मके पोषण करने वालोंमें ऊंचे भारतीयो ! धर्मद्वेषियोंकी नीतिकी भीतको फोड़ने वाला, आपके डर और फूट को तोड़ने वाला, श्रीमान् भृगुकुलोत्पन्न वीर अर्थात् श्रीपरशुरामके अत्युच्च महिमाको प्रकाशित करने वाला यह स्तोत्र आपके कल्याणके लिये बेरोकटोक दिनरात आपके कण्ठ में शोभित हो ॥१॥

Scanned with CamScanner

श्रीः

* श्रीपरशुरामस्तोत्रम् *

महामहिम-आचार्य-श्रीमदमृतवाग्भवप्रणीतम् ।

श्रीपरशुराममन्त्रो यथा मन्त्रमहार्णवे प्रतिपादितः—

"ॐ रां रां ॐ रां रां ॐ परशुहस्ताय नमः" इति

"ॐ जामदग्न्याय विद्महे महावीराय धीमहि । तन्नः परशुरामः प्रचोदयात्" इति । ॐ जामदग्न्याय हृदयाय नमः, ॐ विद्महे शिरसे स्वाहा, ॐ महावीराय शिखायै वषट्, ॐ धीमहि कवचाय हुं, ॐ तन्नः परशुरामो नेत्रत्रयाय वौषट्, ॐ प्रचोदयादस्त्राय फट् । इति षडङ्गन्यासः । एवमेव करन्यासः । अथ ध्यानम्—

सम्पूर्णा विलसन्ति सोपनिषदो वेदोपवेदाः पुरः
पृष्ठे मार्गणपूर्णतूणविलसत्कोदण्डदण्डो महान् ॥
बर्हिष्टोमकमण्डलू च परशुं पाण्योर्वहन् शास्त्रवित्
शापे शस्त्रवरे च पेशलकरः श्रीभार्गवो भ्राजते ॥१॥

सकल वेद उपवेद उपनिषद् हृदय विराजत ।
शरन भर्‌यौ तूणीर पृष्ठ पर वर धनु राजत ॥
बांए कर कुशमुष्टि कमण्डलु अति छवि छावत ।
दांए परशु प्रचण्ड सतत अरि हृदय कँपावत ॥
शाप शस्त्र दोऊन में, पारंगत सुप्रवीण हैं ।
अस श्रीभृगुकुल-कमलवर,शोभित धर्म धुरीण हैं ॥१॥

Scanned with CamScanner

जिनके अग्रभागमें उपनिषदों सहित समग्र वेद और उपवेद चमकते हैं और जिनके पृष्ठदेश पर बाणोंसे भरा तूणीर और विशाल धनुष सुशोभित हो रहे हैं, जिन्होंने बाएँ हाथमें कुशमुष्टि और कमण्डलु तथा दाएँ हाथमें परशु धारण किया हुआ है, शाप देना तथा शस्त्र चलाना इन दोनों कार्योंमें दक्ष-हस्त वे भगवान् श्रीपरशुरामजी शोभा पा रहे हैं ॥१॥

मत्तक्षत्रियकृत्तकण्ठविगलद्रक्तौघसम्प्लावितं
भक्ताऽनुग्रहणं कठोरपरशुं धृत्वाऽवतीर्योऽधुना ॥
दृप्तोद्दण्डदुरीहदुष्टदमनो दीनाऽऽवलीपालको
धर्मोद्धारधुरन्धरो भृगुवरो रामः समुज्जृम्भताम् ॥२॥

मत्त क्षत्रियन कटे कण्ठ शोणितसों प्लावित ।
भक्तानुग्रहकारि परशुयुत प्रगटे बलमित ॥
दृप्तोद्दण्ड दुरीह दुष्ट दल दमन करैय्या ।
दीनोद्धारक वीर प्रवर भूभार हरैय्या ॥
धर्मोद्धार धुरन्धर भृगुकुल कमल ललाम ।
विजयी सर्वोत्कर्षसो, होंय सदा श्रीराम ॥२॥

उन्मत्त क्षत्रियोंके काटे हुए गलोंसे बहने वाले रुधिरके प्रवाहमें डुबाये हुए, भक्तोंके ऊपर अनुग्रह करनेमें सहायक, कठोर परशुको धारण कर अब अवतीर्ण होकर, उन्मत्त उजड्ड दुष्टवासना वाले, ? दीन लोगोंकी पालना करने वाले, धर्मोद्धारमें धुरन्धर, भृगुकुलश्रेष्ठ श्रीपरशुरामजी महाराज सर्वोत्कर्षसे विजयी हों ॥२॥

? दुष्टों का दमन करने वाले

श्रीमद्रेणुकया धृतं स्वजठरे भूभारनाशाय यत्
श्रीमद्भार्गवजामदग्न्यमतुलं रामाभिधानं महः ॥
दृप्यत्पार्थिववृन्दकाननललज्ज्वालाढ्यवैश्वानर-
श्चण्डीप्राणपतिप्रियस्य परशोरादायि तत्संस्तुमः ॥३॥

हरन हेत भू भार रेणुका जठर धर्‌यो जिहँ ।
अभिमानी नरपाल ब्यूह वन दहन करन कहँ ॥
ज्वाल—माल संयुक्त प्रबल दावाग्नि स्वरूपहिं ।
चण्डी प्राणाधार परम प्रिय परशु लह्यौ जिहिं ॥
भृगुकुल-कमल-पतंग जो श्री जमदग्नि कुमार है ।
अतुल तेज तिहिं राम की स्तुति बारम्बार है ॥३॥

श्रीमती रेणुका भगवतीने पृथ्वीका बोझ हटाने के लिये जिसको अपने गर्भमें धारण किया, अभिमानी राजाओंके झुण्डरूपी जंगलोंको लीलने वाली ज्वालाओंसे युक्त वैश्वानर, अर्थात् अग्नि स्वरूप, चण्डीके प्राणपति अर्थात् शम्भु के प्यारे परशुको प्राप्त करने बाले, भृगुवंशोत्पन्न श्रीजमदग्निसम्भव रामनाम के उस अनुपम तेजकी हम स्तुति करते हैं ॥३॥

लक्ष्मीपतेरुरसि रोषकषायिताक्षः
पादप्रहारमकरोन्मुनिपुङ्गवो यः ॥
ब्रह्मर्षिवृन्दपरिचुम्बितपादपद्मः
स श्रीभृगुर्जयति विप्रकुलप्रकाशः ॥४॥

जो मुनि श्रेष्ठ सरोष कषायित कर युगलोचन ।
हरि हिय मारी लात कियो किंचित् हू सोच न ॥
परि चुम्बित पदपद्म जासु ब्रह्मर्षि अनेकन ।
अस श्री भृगु द्विजवंश दीपजय व्यापित त्रिभुवन ॥४॥

जो सम्पूर्ण मुनियोंमें श्रेष्ठ हैं, जिन्होंने क्रोधसे लाल आंखें बनाकर लक्ष्मीके पति अर्थात् भगवान् विष्णुके वक्षःस्थलमें लात मारीथी, सहस्रों ब्रह्मर्षि जिनके चरण-कमलोंको चूमते हैं, विप्रकुल में अतिप्रसिद्ध उन श्रीमान् भृगुमहर्षिका जय-जय कार हो रहा है ॥४॥

श्रीमानुदारचरितो जयतादजस्रं
ब्रह्मर्षिसोमजमदग्निरिति प्रसिद्धः ॥
दृप्यन्नृपान्तकरणं तनयं प्रसूय
येनाऽखिलं जगदिदं परितो व्यरक्षि ॥५॥

जिहिं नृशंस खल नृपन निधन कारी सुत जायौ ।
कर संरक्षण अखिल विश्वको त्रास मिटायौ ॥
जय जमदग्नि उदार चरित त्रिभुवन विख्याता ।
जयति ब्रह्म ऋषि भानु मान द्विजवंश प्रदाता ॥५॥

उन महानुभावका सर्वदा जय-जयकार हो, जिनका चरित्र बहुत उदार है, जो ब्रह्मर्षियोंमें श्रेष्ठ जमदग्नि नाम से प्रसिद्ध हैं, पृथ्वीके दुष्ट अभिमानी शासकोंके नाश करने वाले पुत्रको उत्पन्न करके इस सम्पूर्ण जगत् का सब ओर से जिन्होंने संरक्षण किया ॥५॥

Scanned with CamScanner

सम्पूर्णभूमिगतवीरमहीपतीना-
मन्यायमाश्रितवतां प्रमदोद्धतानाम् ॥
सा कालरात्रिरिव नाशकरी समन्तात्
श्रीरेणुका भगवती विजयाय भूयात् ॥६॥

अन्यायाश्रित तथा प्रमदोद्धत नर पालन।
कालरात्रि उन्मत्तवीर शासकन संहारन॥
अस पूज्या भगवती रेणुका जग निस्तारनि।
भक्तन पर है सदय शान्ति शुभ शिव जयकारिन॥६॥

अन्यायका आश्रय करने वाले अतिहर्ष अभिमान या स्त्रीसम्बन्धसे उन्मत्त सारे पृथ्वीके वीर शासकोंका कालरात्रिके समान चारों ओर से संहार करने वाली वह श्रीमती रेणुका भगवती हमारे विजयके लिये हो ॥६॥

देवेन येन ततमस्तिसमस्तमेत-
द्विश्वं स्वशक्तिखचितं स्वविलासरूपम्
तं त्वां महर्षिगणपूजितपादपद्मं
सर्वात्मना भृगुवरं शरणं भजामः ॥७॥

आतम विलास स्वरूप समायौ आतम शक्ति में।
यह ब्रह्माण्ड समस्त व्यापलिय जिहिं स्वशक्ति में॥
पूजत मह ऋषि व्यूह जासु पद पद्म सुखारी।
लेंय रावरी शरण सुजन संरक्षण कारी॥७॥

Scanned with CamScanner

आत्मविलासस्वरूप आत्मशक्तिमें समाया हुआ यह सम्पूर्ण विश्व जिस देव ने व्याप लिया है, कोटि-कोटि महर्षि जिनके चरणकमलों की पूजते हैं, उन सज्जनोंके संरक्षक भृगुकुलमें श्रेष्ठ आपकी हम शरण लेते हैं ॥७॥

धर्मद्विषां नियमनाय गृहीतदीक्षं
श्रीरेणुकाभगवतीजठरात्प्रसूतम् ॥
श्रीभार्गवस्य जमदग्निमुनेः सुपुत्रं
रामं लसत्परशुपाणितलं नमामः ॥८॥

बास कियो श्रीमती रेणुका जठर मँझारी ।
श्री भार्गव जमदग्नि तनय परशा कर धारी ॥
लीन्ही दीक्षा धर्म द्वेषियन नियमन कारी ।
प्रणवत अस श्री राम परशुयुत बारम्बारी ॥८॥

धर्मद्रोहियोंका नियमन करनेके लिये जिन्होंने दीक्षाको श्रीमती रेणुकाके गर्भसे जो उत्पन्न हुए, जो श्रीभृगुगोत्रोत्पन्न जमदग्नि महर्षिके सुपुत्र कहलाये, जिनके हाथ में परशु चमकता है, उन श्रीराम को हम प्रणाम करते हैं ॥८॥

स्फूर्जन्मदोद्धतनृपावलिकाननाऽऽली-
र्दग्ध्वा, महीसुरगणान्परिरक्ष्य बन्धून् ॥
त्रातं भुवस्तलमिदं भवता समस्तं
सम्प्राप्य खण्डपरशोः परशुं प्रसन्नात् ॥९॥

बाढ़त मद उन्मत्त व्यूह शासक वन जारी ।
संरक्षण महिसुरन कियौ बन्धुन सुखकारी ॥
कर प्रसन्न भगवान शम्भु परशा शुभ पायौ ।
कर रक्षित ब्रह्माण्ड निखिल भूभार हटायौ ॥९॥

बढ़ते हुए अभिमान से उन्मत्त शासकोंके झुण्डरूपी जंगलोंको जलाकर अपने भाई ब्राह्मणोंका संरक्षण करके प्रसन्न खण्डपरशु अर्थात् भगवान् शम्भु से परशुको प्राप्त कर इस सम्पूर्ण पृथ्वीतल का आपने संरक्षण किया ॥९॥

लोकत्रयाऽतुलपराक्रमजन्मभूमेः
शीर्षं निकृत्य कृतवीरसुताऽर्जुनस्य ॥
त्रिःसप्तवारमकरोर्वसुधां समस्तां
निःक्षत्रियां स्वपितृतर्पणकामनायाः ॥१०॥

तिहुँलोकन में अधिष्ठान पुरुषार्थ अचल कौ ।
कार्तवीर्य शिर काट लियौ जैसे पशु बलि कौ ।
निज पितरन कौं तृप्त करन भूमण्डल सारौ ।
निःक्षत्रिय इक्कीस बार कर यश विस्तारौ ॥१०॥

तीनों लोकोंमें अनुपम पराक्रमके एकमात्र अधिष्ठान कृतवीर पुत्र अर्जुन (सहस्रबाहु) के सिरको काट कर अपने पितरोंको तृप्त करनेके निमित्त सम्पूर्ण पृथ्वीको आपने इक्कीस बार निःक्षत्रिय किया ॥१०॥

Scanned with CamScanner

दुर्नीतपार्थिवकदम्बनिकृत्तशीर्ष-
स्रावद्रक्तबुधिरसिद्धधुनीजलौघैः ॥
आकण्ठतो निजपितॄन्परितर्प्य पश्चात्
प्रादा धरांवसुमतीं किलकश्यपाय ॥११॥

काट शीस दुर्नीत नृपालन सुगिरि बनाये ।
तिनसों प्रगटी रक्त गङ्ग त्रैलोक कँपाये ॥
तिहि प्रवाहसों तृप्त पितर आकण्ठ कराये ।
कश्यप ऋषिको कर प्रदान वसुधा हर्षाये ॥११॥

अन्यायी दुष्ट पृथ्वीपतियोंके काटे हुए सिरोंके पहाड़ोंसे निकलनेवाली रक्तकी गङ्गाके जलप्रवाहसे कण्ठपर्यन्त अपने पितरोंको तृप्त करनेके पश्चात् धनसे भरी सम्पूर्ण पृथ्वीका कश्यप महर्षिको आपने दान दे दिया ॥११॥

पाणौ विलोक्य परशुं भगवँस्त्वदीये
स्त्रीवेषभाग्दशरथोऽपि पलायितोऽभूत् ॥
यः स्वासनार्ध उपवेश्य पुरन्दरेण
सम्मानितोऽभवदमोघबलेन शश्वत् ॥१२॥

जिहिं अमोघबल इन्द्र गौरवान्वित ही कीन्हों।
निज अर्धासन कर प्रदान बहु विधि सुख दीन्हों॥
लखि राउर कर परशु वही दशरथ महाराजा।
वनिता वेष बनाय छिपे भय सों तजि लाजा॥१२॥

महाराज! आपके हाथमें परशुको देख कर वे महाराज दशरथभी स्त्रीवेषमें छिपकर भाग गये थे, जिनको कि अव्यर्थ-बल इन्द्रने अपने आधे आसन पर बिठाकर सम्मानित किया था। ॥१२॥

श्रीराम! भार्गव! भवच्चरणारविन्द-
मूलं शरण्यमधुना वयमागताः स्मः॥
कारुण्यपूर्णसुदृशा किल नोऽनुगृह्य।
शक्तिं निजामनयनाशकरीं प्रदेहि॥१३॥

हे भार्गव! श्रीराम! भक्त संरक्षण कर्ता।
चरण शरण हम लही प्रभो! आरत दुख हर्त्ता॥
करुणा पूर्ण सुदृष्टि अनुग्रह कर अब कीजे।
खल दुर्नीति विनाश करी शक्ती निज दीजे॥१३॥

हे भृगुगोत्रोत्पन्न श्री रामजी! भक्तोंके संरक्षक! आपके चरणकमलोंके पास हम आये हैं, अपनी दयासे भरी सुन्दर दृष्टि से हमारे ऊपर अनुग्रह करके दुष्ट और दुष्टोंकी अनीतिको नाश करने वाली अपनी शक्ति हमें प्रदान करें॥१३॥

Scanned with CamScanner

वाक्चातुरी चलति नो चतुराननस्य ।
यच्छक्तिवर्णनविधौ खलु तत्र केयम् ॥
अस्माकमल्पविदुषां नृगिरा वराकी ।
शक्ता भवेत्तदपि नाथ ! वरं प्रदेहि ॥१४॥

वर्णत जाकी शक्ति चतुर चतुरानन हारे ।
तिहिं किमि सकहिं वखान मनुज अल्पज्ञ विचारे ॥
तऊ विनय कर जोर यही है नाथ हमारी ।
कीजै इष्ट प्रदान प्रभो ! दीनन दुखहारी ॥

हे नाथ ! जिसकी शक्तिके वर्णन करने में ब्रह्माका वाक्चातुर्य नहीं चलता, वहां अल्पज्ञ हमारी मनुष्योंकी वाणी विचारी किस तरह समर्थ हो, तो भी हे नाथ ! हमारा इष्ट हमें दीजिए यही प्रार्थना है ॥१४॥

वीरश्रीजामदग्न्यस्य पुण्यं स्तोत्रमिदं नराः ।
पठन्त्यनन्यमनसो येऽर्थबोधपुरस्सरम् ॥१५॥
दुःशासनान्तकरणी भीमा धर्मप्रबोधिनी ।
तेषां करगता शक्तिश्चकास्त्येव न संशयः ॥१६॥

Scanned with CamScanner

जो नर यह जमदग्निनय स्तोत्र उदारा ।
कर अनन्य मन पढ़हिं सुनहिं कर अर्थ विचारा ॥१५॥
तिनके कर दुःशासनान्तकारी भय हारी ।
धर्म प्रबोधनि शक्ति लसै निश्चय सुखकारी ॥१६॥

महर्षि जमदग्निके वीर पुत्र भगवान् श्री परशुरामके इस पवित्र स्तोत्रको जो पुरुष अर्थ की ओर ध्यान देते हुए एकाग्र चित्त से पढ़ेंगे उनके हाथोंमें दुष्ट शासनका अन्त कर देने वाली, शत्रुओंके लिये भयंकर और धर्मको जगाने वाली शक्ति अवश्य दमकेगी इसमें कुछ भी सन्देह नहीं ॥१५-१६॥

अङ्काष्टनन्दपृथिवीमितवैक्रमाब्दे
वैशाखशुक्ल गिरिजादिवसे ग्रहेशे ॥
मार्तण्डतीर्थभवने जमदग्निपुत्र
स्तोत्रं व्यधायि विदुषाऽमृतवाग्भवेन ॥१७॥

शुभ संवत् निधि सिद्धि भक्ति शशि कियो प्रकासा ।
तिथि तृतीया रवि शुक्ल पक्ष वैशाख सुमासा ॥
पूज्य चरण श्री अमृतवाग्भवाचार्य कृपाकर ।
विरच्यौ पुण्य स्तोत्र परशुवर केर सुभग वर ॥१७॥

विक्रम सम्वत् १९८९ वैशाख शुक्ल तृतीया (अक्षय्य तृतीया परशुराम जन्मदिन) रविवार के दिन श्रीमार्तण्डक्षेत्रमें (मटन काश्मीर में) जमदग्निके पुत्र श्री परशुरामका स्तोत्र विद्वान् श्रीमदमृतवाग्भवने बनाया ।

Scanned with CamScanner

विक्रम संवत् नव निधि भक्ति चन्द्र सुखकार।
फागुन मास सुपूर्णिमा शुक्ल पक्ष बुधवार॥
अनुदित भाषा छन्द में कियो स्वमति अनुसार।
श्री विश्वम्भर तनय द्विज सेवक नन्द कुमार॥
बाल सुलभ चापल्य यह काव्य ज्ञान नहिं मोय।
विद्वज्जन कवि क्षमहि यदि भूल चूक कछु होय॥

इति श्रीसर्वतन्त्रस्वतन्त्र महामहिम-आचार्य श्रीमदमृतवाग्भव-प्रणीतं राष्ट्रभाषाऽनुवादसहितं श्रीपरशुरामस्तोत्रम्।

Scanned with CamScanner

प्रकाशक—
पं० गोविन्द मिश्र
(अध्यक्ष-श्रीस्वाध्यायमदन)
चौबुर्जा, भरतपुर राजस्थान ।

पुस्तकके पुनर्मुद्रण आदिका अधिकार प्रकाशकके अधीन है

श्रीसिद्धमहारहस्यम्

श्रीमदानन्दवनप्रसूनमालाका यह एक अत्यन्त सुगन्धित प्रथम दिव्य पुष्प है। "आधिदैविक जगतके लिये यह एक अमूल्य उपहार है," ऐसी विशिष्ट विद्वानोंकी सम्मति है। दैवी उन्नतिके अभिलाषी इसको पढ़कर लाभ उठावें।

१–श्रीत्रिगुणेश्वरस्तोत्र	मुद्रित
२–श्रीमुक्तिलहरी	मुद्रित
३–श्रीस्वाध्यायमहिमस्तोत्र	मुद्रित

मुद्रक—
भरतपुर प्रिन्टर्स
नदिया मोहल्ला, गङ्गा मंदिर,
भरतपुर ।

Scanned with CamScanner